© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section: Engineering and Technology

जानकीजीवनम् महाकाब्य का वैशिष्ट्य

सुशील कुमार तिवारी
शोधच्छात्र
रांष्ट्रीय संस्कृत संस्थान गंगानाथ झा परिसर–इलाहाबाद।

जानकीजीवनम् महाकाव्य अभिराज राजेन्द्र मिश्र द्वारा विरचित है, इसमें 21 सर्ग हैं। यह उत्कृष्ट कोटि का महाकाव्य है। इसका कथानक वाल्मीकि रामायण से अनुप्राणित होते हुए भी सर्वथा नवीन है। इस महाकाव्य का वर्ण्य विषय जानकी का जीवन है। जानकी का चरित्र शील, सौन्दर्य एवं करूणामयी जीवन कवि ने हृदय को इतना अधिक द्रवीभूत किया कि जानकी के शोभन चरित्र को ही केन्द्र में रखते हुए जानकीजीवनम् जैसे उच्चकोटि के महाकाव्य की रचना कर डाली।

कवियों में काव्य रचने की प्रतिभा होती है। वह अपनी नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा से किसी नितान्त नीरस वस्तु में भी काव्यात्मक सौन्दर्य भर देता है। जब भगवती सीता के आदर्श जीवन पर सम्मानित अभिराज राजेन्द्र मिश्र जैसा समर्थ महाकवि कविता करने की इच्छा करेगा तो परम प्राज्जल एवं उदात्तगुणों से युक्त जानकी जीवनम् जैसा महाकाव्य सहृदयों के अनुरंजन हेतु अवश्यमेव निष्पन्न होगा।

जानकीजीवनम् महाकाव्य का प्रारम्भ अत्यन्त विषादपूर्ण घटना के वर्णन से प्रारम्भ होता है। अवर्षण से पीड़ित विदेह जनपदवासियों की प्रसन्नता के लिए राजा जनक गुरु शतानन्द के पास आते हैं, तत्पश्चात् गुरू के निर्देशानुसार इन्द्रदेव को प्रसन्न करने के लिए यज्ञायोजन स्वरूप राजा जनक ने अपने हाथों से पृथ्वी पर हल चलाना प्रारम्भ कर दिया तथा कुछ ही दूर हल लेकर बढ़े ही थे तभी अचानक भूमि के भीतर किसी मजबूत वस्तु में हल की नोक अटक गयी। राजा के द्वारा सम्पूर्ण शक्ति लगाने पर भी हल आगे नहीं बढ़ा अन्ततः राजा ने हल को जैसे ही बाहर निकाला वहाँ एक प्रकाशपुन्ज प्रकट हो गया जिसमें एक कोमल कन्या कुम्भ रूपी शैया पर विराजमान दिखायी पड़ती है।

व्यलोकि सर्वैरपि लाङ्गलाग्रप्रहारभिन्नोदरकुम्भतल्पे।
सुखं शयाना मदिरायताक्षी दिवौकसां श्रीरिव कापिबाला।।[1]

आयोनिजा जानकी को राजा जनक महल में लेकर आते हैं। अपारवर्षा होती है।, प्रजाओं में हर्षोल्लास मनाया जाता है।

बाल्मीकि–रामायण में भी जानकी के जन्म की कथा इसी प्रकार वर्णित है।

अथ मे कृषतः क्षेत्रं लाङ्गलादुत्थिता ततः।
क्षेत्रं शोधयता लब्धा नाम्ना सीतेति विश्रुता।।
भूतलादुत्थिता या तु व्यवर्धत ममात्मजा।।[2]

प्रस्तुत महाकाव्य में सीता के नैसर्गिक बालक्रीडाओं का सुन्दर चित्रण किया गया है जबकि बाल्मीकि रामायण में सीता के बालक्रीड़ा के प्रसंग का अभाव है। जानकीजीवनम् में सीता अपनी छोटी–छोटी बालकेलियों के प्रचुर विस्तार से निरन्तर माता–पिता एवं प्रजाजनों को आनन्दित करती है।

अमोदयत्सा पितरावनारतं स्वकेलिलेशप्रचारणैः।
निभालयन्ति नियतिं विनोदनैः प्रजाजनन्चापि चकार सम्भृतम्।।[3]

प्रस्तुत महाकाव्य में कवि ने किशोरावस्था का मनोहारी चित्रण किया है। बाल्यावस्था से किशोरावस्था में प्रवेश करने पर बालक एवं बालिकाओं में शारीरिक एवं मानसिक आदि अनेक परिवर्तन दिखायी देते हैं तथा विषमलिंगियों के प्रति आकर्षण बढ़ते हैं। विदेहनन्दिनी किशोरी सीता में ये सभी लक्षण दिखायी पड़ते हैं। किशोरावस्था में पहुँचने पर विदेहनन्दिनी के दोनों अपांगो का विस्तार अप्रत्याशित रूप से कर्ण कुहरों तक सुशोभित होने लगा तथा दोनों कपोलमण्डलों पर भी पूर्ण प्रस्फुटित पाटल पुष्प निरन्तर दृष्टिगोचर होने लगा।

अब सीता अकेले में नेत्रों को बंद करके किसी कमलनयन प्रीततम की कल्पना करने लगी। बाल्यावस्था में जो सीता बाल्यचपलता के कारण कुछ भी बोल देती थी अब उसमें लज्जा प्रवेश कर गयी है। गिरिजा मंदिर में प्रस्थान के समय श्री राम द्वारा अपने गुणों की प्रसंशा सुनकर वह कुछ उत्तर देने के लिए उत्कण्ठित होती है किन्तु लज्जा के कारण जड़ता को प्राप्त होती हुई वह न आगे बढ़ पायी और न पीछे, न दाहिने खिसक सकी न बांये, न उसने ऊपर की ओर देखी अथवा न नीचे की ओर। सीता एकदम स्थित मूर्ति बन गयी।

न च ससार पुरो न च पृष्ठतो न खलु दक्षिणतो न च वामतः।
उपरि नैव ददर्श न वाप्यधो ह्यचलमूर्तिरिवाजनि जानकी।।[4]

प्रस्तुत महाकाव्य में लोक परम्पराओं की चारू अभिव्यंजना हुई है। जैसे बाल्यावस्था में सीता के द्वारा गुड्डे–गुडियों का खेल, सखियों के साथ हिरन–हिरनी बनने का खेल, मिट्टी की चक्की का खेल एवं हर तालिका ब्रत में लोकगीत, कजली गाने आदि। इसी प्रकार अन्य कई स्थलों पर लोक परम्पराओं को चित्रित किया गया है। राम एवं सीता के विवाह के अवसर पर कलश सूप तथा आंचल के छोर से दूल्हे की परछन करना।

घटेन शूर्पेण पटांचलेन प्रदक्षिणीकृत्य वरन्नुराज्ञी।[5]

सीता–राम के विवाह के अवसर पर लोकगीतों का गाना, लक्ष्मण द्वारा सीता से हास–परिहास करना आदि का वर्णन लोक परम्पराओं को अभिव्यंजित करता है। यह कवि की नवीन कल्पना है जो काव्य को सरस एवं मधुर बना देता है। ऐसा वर्णन अन्य रामकथाधारित महाकाव्यों में नहीं दिखायी पड़ता है।

अभिराज राजेन्द्र मिश्र के जानकीजीवनम् महाकाव्य पर कालीदास का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। अभिज्ञानशाकुन्तल में कण्व ऋषि जिस प्रकार पुत्री को पति घर भेजने से आत्म सन्तुष्टि का अनुभव करते हैं उसी प्रकार जानकी जीवनम् महाकाव्य में राजा जनक पुत्री सीता को पति घर भेजकर आत्मक संतुष्टि का अनुभव करते हैं।
यथा द्रष्टव्य– अभिज्ञानशाकुन्तल में

अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्यसंप्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।[6]

जानकीजीवनम् में इसका प्रभाव द्रष्टव्य है–

धनं भवत्येव सुताऽन्यदीयं पिताऽवितामात्रमसौ नु तस्याः।
समर्प्य जातेऽधिकृतेऽद्य त्वां विभाति निर्मक्षिकमेव मच्छम्।।[7]

प्रस्तुत महाकाव्य की सबसे बड़ी विशेषता है सीता के निर्वासन का अभाव। उक्त घटना वाल्मीकि रामायण एवं अन्य रामकथाधारित महाकाव्यों और नाटकों से सर्वथा भिन्न है। बाल्मीकि रामायण में राम सीता विषयक लोकापवाद को सुनकर दुखी हो जाते हैं। उन्हें पता है कि सीता निर्दोष है फिर भी अपनी कीर्ति की रक्षा के लिए बड़े निष्ठुरता से सीता का परित्याग करते हुए लक्ष्मण से कहते हैं– हे सुमित्रानन्दन ! बाल्मीकि आश्रम के निकट निर्जन वन में तुम सीता को छोड़कर शीघ्र लौट आओ, मेरी इस आज्ञा का पालन करो। सीता के विषय में मुझसे कोई दूसरी बात न कहना, जो मेरे इस कार्य मं बाधा डालेगा वह सदा के लिए मेरा शत्रु होगा।

आश्रमो दिव्यसंकाशस्तमसातीरमाश्रितः।
तत्रैतां विजने देशे विसृज्य रघुनन्दन।।
शीघ्रमागच्छ सौमित्रे कुरूष्व वचनं मम।
न चास्मि प्रतिवक्तब्यः सीतां प्रति कथंचन।।
अहितानाम ते नित्यं मदभीष्टविचातिनात्।[8]

भवभूति के उत्तररामचरितम् में भी राम सीता विषयक लोकापवाद को सुनकर सीता निर्वासन का आदेश देते हैं। यहाँ वे रामायण के राम की कीर्ति के लिए नहीं अपितु प्रजा के अनुरंजन के लिए सीता का परित्याग करते है, वे कहते हैं कि चाहे जो कुछ भी हो, जनता को प्रसन्न रखना सज्जनों का कर्तव्य है जिसको पिता जी ने मुझे तथा अपने प्राणों को छोड़कर पूरा किया है।

सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम्।
यत्पूरितं हि तातेन मां च प्राणांश्च मुंचता।।[9]

बीशवीं शताब्दी के आधुनिक कवि रेवाप्रसाद द्विवेदी के उत्तरसीताचरितम् में राम सीता विषयक लोकापवाद सुनकर व्यथित है वे कुछ निश्चय नहीं कर पा रहे हैं उनके मनोव्यथा को जानकर सीता स्वयं वन जाने का निर्णय लेती है जिससे राम की कीर्ति की रक्षा हो सके। वह कहती है– हे नाथ यदि आपके अक्षय राज्य सुखशान्ति के जल से शीतल है तो उसमें संताप पैदा करने वाली मुझ जैसी निन्दित व्यक्ति का क्या प्रयोजन? मैं यहाँ आप चाहें रहे सकती हूँ। केवल विश्वमानव को निष्कण्टक रहना चाहिए, आपकी कीर्ति के साथ। वह माताओं से भी कहती है–मै यहाँ से जाती हूँ। स्वयं ही जाती हूँ मुझे इसकी कोई व्यथा नहीं है। अपनी कीर्ति की रक्षा के लिए अच्छे दम्पत्ति और सत्पुरूष मृत्यु से भी कभी नहीं डरते।

यामि मातर इतः स्वतस्ततो यामि, यामि विपिनं न मे व्यथा।
कीर्तिकायमवितुं सुमानुषा मृत्युतोपि न हि जाते विभ्यति।।[10]

इस प्रकार हम देखते हैं कि कही राम सीता का निर्वासन अपनी कीर्ति के लिए कहीं प्रजानुरन्जन के लिए करते हैं तो कहीं राम के कीर्ति की रक्षा के लिए सीता स्वयं वन जाती है, किन्तु प्रस्तुत जानकीजीवनम् महाकाव्य में कवि सीता के निर्वासन का अवसर ही नहीं आने देता। जब राम सीता विषयक लोकापवाद को सुनकर स्वयं को घर में बंद कर लेते हैं तब इस समाचार से दुःखित वशिष्ठ एक धर्म सभा का आयोजन करते हैं। पूरी सभा के समक्ष प्रश्न करते हैं– लंका की समस्त जनता के समक्ष, वानरवाहिनी की उपस्थिति में मरने के लिए कटिबद्ध देवी सीता जब चिताग्नि पर आरूढ़ हुई थी? क्या वह लोक प्रचलित जनश्रुति मात्र है।

समग्रलंकाजनतासमक्षं प्लवंगसैन्येऽपि च विद्यमाने।
रूरोह सीताऽधिचितं मुमूर्षः सा किं कथा लोकजनश्रुतिर्वा।।[11]

यदि इन सबके समक्ष अग्निपरीक्षा झूठी है तो कोई स्वयं चिता पर चढ़कर अपने चरित्र की पवित्रता का प्रदर्शन करे। वशिष्ठ की मर्मस्पर्शी उद्बोधन को सुनकर पूरी जनसभा ग्लानि एवं विषाद के सागर में डूब गयी, तभी अचानक रजक राघव के पास पहुंचकर स्वयं को अपराधी मानते हुए मृत्यु की याचना करता है उसके इस पश्चाताप पर राघव क्षमा कर देते हैं, यही पर सीता के निर्वासन का पटाक्षेप हो जाता है। यह घटना कवि की नवीन कल्पना है, वह बाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड में चर्चित सीता निर्वासन का प्रस्तुत महाकाव्य के आत्मकथ्य में जोरदार खण्डन करते हैं उनके अनुसार ''यदि सीता निर्वासन सचमुच हुआ था तो फिर लंका में हुई अग्नि परीक्षा की सार्थकता क्या हुई? ब्रह्मा द्वारा राम के महाविष्णुत्व का प्रतिपादन, अग्नि द्वारा स्वयं सीता का समर्पण तथा महाराज दशरथ द्वारा उनका अभिनन्दन ये सारी दिव्य घटनायें संगत कैसे होगी? क्या अयोध्या की प्रजा देव समाज से भी महत्तर! थी, क्या प्रजावर्ग में त्रिकालदर्शी, धर्म नियामक कुलगुरू वशिष्ठ एवं लाखों विद्वान, पण्डित, श्रेष्ठी, सामन्त, अमात्य एवं प्रबुद्ध नागरिक

नहीं थे? क्या सबके सब देवी सीता को 'असती ही समझते थे?'' कवि अपने इन्ही सब तर्को के कारण सीता के निर्वासन का अभाव प्रस्तुत महाकाव्य में करता है, जो महाकाव्य में वैशिष्ट्य को प्रकट करता है।

प्रस्तुत महाकाव्य में लवकुश का जन्म अयोध्या के राजमहल में हुआ था न कि बाल्मीकि रामायण की भांति बाल्मीकि के आश्रम में। राम दोनों बालकों की शिक्षा–दीक्षा एवं संस्कारित बनाने के लिए बाल्मीकि के पास भेजते हैं। राम की अनुमति से सीता भी कुछ दिनों के लिए दोनों बालकों के साथ बाल्मीकि मुनि के आश्रम में रहती है। उक्त कथावस्तु भी कवि की निजी कल्पना है, जो काव्य के वैशिष्ट्य को परिलक्षित करती है।

निष्कर्षतः एक ओर जहां सीता का जन्म, रावणापहारण, अग्नि परीक्षा एवं जनापवाद आदि का प्रस्तुत महाकाव्य में बाल्मीकि रामायण के अनुसार मनोहर ढंग से चित्रण किया गया है, वहीं दूसरी ओर सीता के बालकेलिचपलता, किशोरावस्था के अभिनय, लोक परम्पराओं का चारूचित्रण, सीता के निर्वासन का अभाव एवं लवकुश का अयोध्या के राजमहल में जन्म लेना आदि का वर्णन कवि की सूझ–बूझ एवं नवीन कल्पना से सरस एवं सुग्राह्य बना दिया जिससे महाकाव्य में वैशिष्ट्य आ गया है।

सन्दर्भ सूची :–

1 जानकीजीवनम्–1/42
2 बाल्मीकि–रामायण,बालकाण्ड–66/13,14
3 जानकीजीवनम्–2/11
4 जानकीजीवनम्–6/57
5 जानकीजीवनम्–7/79
6 अभिज्ञानशाकुन्तलम्–4/22
7 जानकीजीवनम्–8/68
8 बाल्मीकि–रामायण, उत्तरकाण्ड–45/18,19,20
9 उत्तररामचरितम्–1/41
10...सीताचरितम्–3/31 11...
जानकीजीवनम्–18/75

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

- जानकीजीवनम् : राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशन वर्ष 1988 ई0, प्रकाशक, वैजयन्त प्रकाशनम् 8, बाघम्बरीमार्ग, इलाहाबाद।
- रामायण : महर्षि बाल्मीकि, सं.2066 प्रकाशक, गीता प्रेस, गोरखपुर

- उत्तररामचरितम् : भवभूति प्रकाशक, रामनारायण लाल विजय कुमार, 2 कटरा रोड इलाहाबाद– 211002
- सीता चरितम् : रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशन वर्ष 1990 ई0 प्रकाशक, कालिदास संस्थानम् 28, महामनः पुरी, वाराणसी–221005
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् : कालिदास प्रकाशक, रामनारायण लाल विजय कुमार, 2 कटरा रोड इलाहाबाद– 211002